

Model paper - 1

I

14 निम्नलिखित में से लक्ष्यचन है -
=4 C4 कमरे

24 'घन' शब्द का बिलीम रूप है
→ A4 निघन

34 'लेखक' शब्द का स्त्री लिंग है
=4 D4 लेखिका

44 'परोपकार' शब्द से संधि है
=4 B4 एन्धी

54 'लगना' शब्द का प्रथम प्रेरणाथक क्रिया रूप है -
=4 C4 लगाना

64 'देश - भक्त' शब्द में समास है -
=4 A4 नत्युत्प

74 आज - युग इंटरनेट युग है परिक्रम स्थान
में सही कारक होगा
→ B4 का

84 मंत्री ने कहा गाडी जान में देर है।
इस वाक्य में प्रथम विराम चिन्ह है
=4 C4 अन्य

II

94 गाजर ; सीजी :: सेब ; फल

104 विडियो का क्लिप ; विचार विनिमय :: ई - प्रशासन ;

114 दहिने हाथ में ; ज्ञान का दीप :: बायें हाथ में
न्याय पताका

124 सर्वेसु पर चढ़ने वाले पहले पुरुष ; तैनासिंग
नामि :: सर्वेसु पर चढ़ने वाली पहली
भारतीय महिला : विचेंधि पाल

111 साक वाक्य में उन्नत लिखिए :-

13. जॉनुमाब्दिन ने कौन सा काम शुरू किया ?
= 4 जॉनुमाब्दिन ने लकड़ी की नौकरा बनाई का
काम शुरू किया ।

144 इंटरनेट बैंकिंग द्वारा क्या भेजा सकता
है ?

- 2 इंटरनेट बैंकिंग द्वारा दुनिया की किसी भी
जगह पर चाहे जितनी भी रकम भेजा
सकता है ।

154 दया किसका मूल है ?

= 8 दया धर्म का मूल है ।

164 बालकृष्ण का रंग कौन सा था ?

- 2 बालकृष्ण का रंग काला था ।

112 दो - तीन वाक्य लिखिए :-

(17) कश्मीरी सेब पाठ में क्या सीख मिलती है ?

-१ काश्मीरी सब पाठ से का लेखक प्रेमचंद्र जी अपने अनुभवों द्वारा पाठकों को यह सचेत कर रहे हैं कि खरीदारी करने समय सावधानी नहीं बरतें तो धोखा खान की संभवता होती है।

18६ अब्दुल कलाम का बचपन बहुत ही विचिंत्र और सादगी में बितने के कारण लिखिए ?

=१ अब्दुल कलाम के घर आठबर के लिए कोई स्थान नहीं था। अनावश्यक था मोशा आराम वाली चीजों में वे दूर रहते थे। घर में आवश्यक चीजों समुचित मात्रा में सुलभता से उपलब्ध थी।

19६ गिम्पू के कार्य - कलाम के बारे में लिखिए।
वही दो वर्ष गिम्पू का घर रहा। वह स्वयं हिलकर अपने घर में झुलता और अपनी काँच के मनको - सी आँसों में कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता - समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्य कलाम पर सबको आश्चर्य होता था।

20६ प्रताप राज किशोर के घर क्या आया।
=१ बसंत मोहर के नीचे आ गया था। बड़ी दर के बाद होगा आया तो उसने प्रताप को पैसे लौटाने का कहा। प्रताप राजकिशोर के साथ चौदह आने देने के लिए राजकिशोर के घर आया था।

21६ मानसूमी के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन लिखिए।
=६ भारत माँ के अन्दर सुन्दर दृश्य - भरे खत हैं।
वन और उपवन में फल और फूल भरे हुआ है और इनसे माँ की प्रकृति - सौंदर्य बढ़ गया है।

228

पराशदा कृष्ण के क्रोध को कैसे शांत करती हैं ?

-4

पराशदा माता कृष्ण से कहती हैं कि मैं कृष्ण सुनी, बलराम * जन्म से ही जुगलपति हूँ। मैं गोधन की कसम खाकर कहती हूँ, मैं ही मेरी माता और तुम मेरे पुत्र हो, इस प्रकार पराशदा कृष्ण के क्रोध को शांत करती हैं।

238

शनि सौरमंडल का सबसे सुंदर ग्रह है, क्यों ?

-4

शनि का ^{था} निर्माण किन गैसीय से हुआ है ? शनि का वायुमंडल हाइड्रोजन, हीलियम, मीथेन तथा अमोनिया गैसीय से बना है।

248

-4

सत्य क्या होता है ? उसका रूप कैसा होता है ? * सत्य बहुत सीधा - भासा, बहुत ही सीधा - साधा जो कुछ भी अपनी आँखों से देखे बिना नमक मिर्च लगाये बाल दिया - पाही सत्य है। सत्य बुद्धि का प्रतिबिंब है, ज्ञान का प्रतिलिपी है आत्मा की वाणी है।

-4

महात्मा गांधीजी का सत्य की शक्ति के बारे में क्या कथन है ? महात्मा गांधीजी का सत्य की शक्ति के बारे में यह कथन है कि - "सत्य एक विशाल वृक्ष है, उसका जितना आकार किया जाता है उतने ही फल उसमें लगते हैं। उसका अन्त नहीं होता"।

II तीन चार वाक्य में लिखिए :-

258 गिल्लू के प्रति महादेवी वरमाजी की ममता का वर्णन कीजिए।

= 4 A लैखिका, दायान से पडा हुआ गिल्लू को हाँस में उठाकर अपने कमरे में ले जाती है। सड़ से रक्त पीछेकर गिल्लू के घावों पर पेंसिलिन का महम लगाती है।

फूल रखने की राक हल्की डलिया में गिल्लूका घर बनाती है।

गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आने पर उसके पंज ठंड होन लगते हैं।

लैखिका डीटर जलाकर उसे अण्डाना देने का प्रयास करती है।

गिल्लू फिर निद्रा में जाने के बाद उसकी समाधी सोलजूही की लता के नीचे बनाती है।

इस तुरफ महादेवी वरमा गिल्लू के प्रति अपनी ममता प्रकट करती है।

264 पंडित राजकिशोर और बसंत से स आप किस श्रेष्ठ मानते हैं? क्यों?

= 4 पंडित राजकिशोर और बसंत से स सौते पंडित राजकिशोर को श्रेष्ठ मानते हैं क्योंकि पंडित राजकिशोर सज्जुयों के नेता थे। उनके शिष्यों के प्रति दया थी इमलिया ना चाहत हुआ भी उन्होंने बसंत की मदद करने के लिए उस से छलनी खरीदी ली। जब उन्हें प्रताप से पता चला कि बसंत पर दुर्वला से कुचल गये है तो वे इत से इकर को बसंत के घर बचने के लिए अपने नौकर से कहकर वहा से चले पडे।

२६६

गीर्वाणों को मरदास के गाँव में भिक्षा,

=५

गीर्वाणों को मरदास में रात प्राण्ड खेदकर दुनिया के
कई देशों के प्रतिनिधियों के साथ 8-10
दूरदर्शन के परदे पर चर्चा कर सकते हैं। रात
ही कभी में खेदकर विभिन्न देशों में रहनेवाले
महोनों के साथ विचार विनिमय कर सकते हैं।

२६६

ईमानदारी के सम्बन्ध में मरदास को कर्तव्य - कर्त
के अनुभव हुआ,

=६

इदरान पर मरदास को सब स्नान हुआ. मरदास
दस बड़ी फूल मानसों मरदास को पहनायी जायी
नी उसने सोचा कि असा. पास कोई मानी हुनाके
उसने ७ फूल - धानियाँ भी सब मनी सम्बन्ध
में मरदास की नयी सम्बन्ध जाणव भी उसने
बदल में कही हुनाकी सम्बन्ध खेदी धी। सब
सम्बन्ध में ही मरदास की सम्बन्ध पहना था। नी
मरदास को धान्य हुआ और दूसरे दिन
मरदास को हुए का सम्बन्ध खेदकर इतिहास
में खेद दिया हुआ था। मरदास दिन रात में
उस केशव को सम्बन्ध मीना नी केशव भी
जाणव था। और सम्बन्ध में सब ईमानदारी
की बातें करके थे। पर सब खेदमान था। अतः
में मरदास भी जाणव हुआ था। पर सब
खेदकर मरदास को मीना कि सम्बन्ध के सब
ने के भी सम्बन्ध जाणव में सम्बन्ध
मरदास को सम्बन्ध में खेदने सब अनुभव
हुना।

२६६

विद्युत् की धारा में पड़ने पर चार्ज की क्षमता
किस प्रकार की?

28

बिंदाई ने पशु पर चढ़ने के लिए दो बन्
बनारा गंगा, मुण्डह देवता नाराज करने के बाद
श्राद्ध पांच नव्वे से निवृत्त पडे। अंग दशमी
के साथ बौद्ध रस्सी के सहज चढाई की।
शौबशीजन की श्राद्धि शरुन्तर पर बढकर कठिन
चढाई आस्थान बनाई।

308

अभिनेत मनुष्य कर्मना के अनुसाद मानव का
सही परिचय करा है।

अभिनेत मनुष्य कर्मना के अनुसाद जिनकी
भी शान्ति प्रानी प्राप्त करने पडे उन्का
परिचय नहीं। उन्का सही परिचय है कि वह
मनुष्य हूय पर जिन धर्म करे मया मानव
से मानव के बीच अन्तर ककार है। द्वेष दूरिया
है उन्के सिद्धांत। मया वह ज्ञानी
नया विद्वान कर्मकारना।

31.

समय का सतुपयोग करे कर सफल है।
समय अधिक महत्वपूर्ण है उपयोगी होता है।
उसे जो उपना सच्य स्याथि बनाना, वाही
आपल काम से सफल होता। जो काम
करना है वो सया करना चाहिये। कम के बारे
में हमें कुछ पना नहीं।

32.

दीड का आचार्य आपल ज्ञानों में निश्चिन्तः
सुखिमा सुख से चाहिन, सगल धान को नक,
पल पक्ष सक्म अंग तुमसी सहिन विदक।

= ६

परन्तु दीर्घ में निम्नलिखित कहने से कि सुविधा
 को मुझे के स्थान देना चाहिए। मुझे मान
 लीने का काम अर्थात् करना है। पर वह भी मान
 लीना है उसमें शरीर के साथ संगीत का ध्यान
 पोषण देना है। इसी प्रकार सुविधा को भी
 इसमें ही विवेक से साथ करना चाहिए। वह
 साथ अपनी तरह से करे पर उम्मा कम सभी
 में बाद। शारी सुविधा विवेक के साथ साथ
 करना चाहिए जिससे सभी को सुख मिले
 साथ।

II

६/६ वाक्य में निश्चिन्ता:-

344

जनता के पक्ष में खड़े का वर्णन कीजिए।
 एकनिष्ठा ने जनता का उल्लेख किया है
 संसारिक सुख और समृद्ध बनाए है। जनता
 को एकनिष्ठा सुख ही मानना है। परिणाम
 में विश्वास अर्थात् समुद्र लहरना है। इसी धारणा
 का धारण में हम के हीर नक कभी कभी
 परनिष्ठाओं को पहचानना शक करने है। इसी
 धारणा का कुछ भाग सहाय्य कहलाना है।
 विशिष्ट में नोमिनी की परनिष्ठाता भावना
 - मान है।

III

जनता की शिवाय कभी का परिचय दीजिए।

= ५

जनता की शिवाय कभी नहीं है।
 वादायी धर्मोत्तम परद कर्म के शक्ति की
 शिवाय और वास्तविकता अस्तित्व है।
 वन्दे इन्दीव शोभापूर के शक्ति की
 पत्नी की प्रतिभा शक्ति मानी है।

पटौं के धरियाँ रामायण महामान की कथा
- निम्न स्थानी है ,
शबलवादनार्जुन श्री 57 फूर ऊँची महामान
की राक्षसिना की परिया है । यह ज्ञाना
और ज्ञानि का महेश है उही है ।
विश्वपुर की विश्वेश्वरी मन्त्री वास्तवना का
अविनीय है ।

354 निम्न लिखित लेखिका रूप कविता :-

असुखमना राक चुनली है सुख खोजकर कस
बसा कभी यह गई , दर्शा और सुधार कस
जब नक न सपन हो . नदि चल कोसाग नुस
संसार का महान एडकार मन मोग नुस

36. गायिका की ध्यानपूर्वक पठकर निम्नलिखित पदना
के उतर लिखिका :

10 जनवरी 1946 को पटारख की नगापुर में पदना
विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ । विश्व में हिन्दी
ध्याक - ध्याक के लिए आगराका पदा कना मरा
हिंदि को अंतर राष्ट्रीय भाषा के रूप में पद
करने के उद्देश्य से हर साल 20 जनवरी को
हिंदी दिवस मनाया जाता है । हिंदि दुनिया के
पचिस भाषा मेंदान नुस भाक , मय कलिने
आदि देशों के विश्व विद्वाना में पदाई कनी
है । दुनिया की अर्थकरने कनी आनकनी
पार भाषा आ न हिंदी भाक भाषा है ।

37 फरमा विश्व हिंदी सम्मेलन कहीं संपन्न हुआ था
10 जनवरी 1946 को पटारख की नगापुर में
विश्व हिन्दी सम्मेलन संपन्न हुआ था ।

५५
-६

विश्व हिंदी दिवस का प्रस्ताव बना है।
विश्व में हिंदी पढ़ाए - पढ़ाए के लिए
आगरा का पद बनाया गया है।
राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करने के
उद्देश्य हैं।

८६
हिंदी दिवस का प्रस्ताव बना है।
20 जनवरी को हिंदी दिवस मनाया जाना है।

८७
द्वितीय की अतिरिक्त सभी राज्यों में
भाषा में हिंदी का प्रसार।

डॉटरनेट :-

1. विषय प्रवेश :-

- * आज का युग इंटरनेट का युग है।
- * बड़े बड़े से मकद एगिट सचार्निंक
- क्षेत्र पर इअस इंटरनेट का अयल पडा है।

2. अर्थ :-

- * इंटरनेट अन्विनिन कंप्यूटरों के कडु अंतर्जाल का माक दूसरे से संबंध स्थापित करन का जाल है।

- * आज इंस्मान के निरा खानपान जिनना असी है इंटरनेट की उतना ही अवश्यक हो गाय।

लाभ :-

- * इंटरनेट द्वारा एल अर से बिना जादा खर्च बिना कौडु भी विचार हो डिगिट रिज हो विडियो चित्र हो दुनिया के किसी भी कोस से अजला सुसकिन हो सया है।

दुष्परिणाम :-

- * इंटरनेट माक और वरदान है। नी दूसरी अल अर्थिगार है।
- * इंटरनेट से पंशसी, बंकिंग, फंड हैकिंग आदि बढ रही है।

उपसंहार :-

- * इंटरनेट ने पूरी दुनिया को माक जाले माकर खडा कर दिया है।
- * जीवन के हर क्षेस से इंटरनेट का बडुन बडा अागदान है इंटरनेट वरदान है, नी वर दुष्परिणाम भी है।

प्रेषक :-

नेहरूजी. नाम

10 वीं कक्षा

सरकारी हाईस्कूल

चिन्नदुर्ग

पूज्य पिताजी ।

आप कौशल ही माँ. यह स्मरण है और
 पर पढ़ाई अच्छे. दादू पेम रहा है ।
 आप देना पढ़ाई में भी पौन बहुत अच्छी
 से अंक ने ~~सब~~ लिया है ।

आपका प्रिय बेटा

नेहरूजी. नाम

पता :-

सुरेशा - सि

चिन्नदुर्ग